शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

समकालीन काव्य और अस्तित्ववाद

डॉ.मनीषा शर्मा (विभागाध्यक्ष जनसंचार)
चोइथराम कॉलेज आफ प्रोफेशनल स्टडीज
योगिता राठौर (शोधार्थी)
एनीबेसेंट कॉलेज
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

अस्तित्ववाद आधुनिक पाश्चात्य दर्शन की एक अधुनातन धारा है। प्रारंभ में इसे फ्रांस में अत्याधिक सफलता प्राप्त हुई थी तथा धीरे-धीरे यह सारे यूरोप में छा गया। कहा जाता है कि प्रथम महायुद्ध के पूर्व ही कीर्कगार्ड और नीत्शे अस्तित्वाद की भूमिका तैयार कर रहे थे। लेकिन इस दर्शन को अपना विकसित और वास्तविक स्वरूप मिला हेडेगर,सार्त्र, मार्सेल, इगा और पाल लिशि द्वारा। साहित्य में अस्तित्वाद का आश्रय लेने वालों में प्रसिद्ध फ्रांसीसी विचारक ज्यां पाल सार्त्र का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है। उन्होंने इस विचारधार को नवीन मोड़ प्रदान किया।

प्रस्तावना

"अस्तित्ववाद वस्तुतः एक दृष्टिकोण के रूप में परम्परागत तर्कसंगत दार्शनिक मतवादों के विरूद्ध एक विद्रोह है जिसने मानवीय सत्ता की समस्या पर विचार किया। सभी अस्तित्ववादियों ने मनुष्य का विवेचन व्यक्ति के रूप में किया और उसे ही अपनी जीवन स्थितियों के लिये उत्तरदायी माना। अस्तित्ववाद, नियतिवाद और आदर्शवाद की प्रतिक्रिया के रूप में उदित हुआ"।1 अस्तित्ववाद वह दर्शन है जो अस्तित्व को सार, तत्व या सत्व से प्रधानता देता है। वास्तव में सार, तत्व वस्तु या व्यक्ति के वे गुण विशेष हैं जो उसका निर्माण करते हैं। अस्तित्ववाद ने मनुष्य को केन्द्र में रखकर उसे स्वयं के प्रति चेतन बनाने का प्रयत्न किया। किर्कगार्ड को आधुनिक अस्तित्ववाद का उदभावक कहा जाता है। किर्कगार्द ने सत्य को आत्मपरक माना और जिसकी परिभाषा में मनुष्य ही प्रमुख तत्व है। अस्तित्ववादी विचारधारा का निरन्तर विकास हुआ। "नीत्शे ने नास्तिकवाद की स्थापना की। उसने ईश्वर को मृत घोषित किया और एक अतिमानव की कल्पना की। अतिमानव की यह कल्पना विध्वसंक थी जिसने मानव बिम्ब को प्रभुत्व की इच्छा, अतिमानव और चिरन्तन मानव जैसे तत्व दिये। यह अतिमानव भी उनका अंतिम लक्ष्य नहीं था.. उसे अतिमानव के अधिकांश तत्व डायानिसियत में मिले थे और वह प्रेम के भोगवादी स्वरूप को स्वाभाविक मानता था"।2 नीत्शे ने अपनी कृतियों में अतिमानव के रूप में इस नवीन बिम्ब को दिया जिसमें बिजली और तूफान दोनों की शक्ति है। उसका पात्र 'जरस्थुस्त्र' ही उसके अतिमानव का प्रतीक बना था। कार्ल यास्पर्स ने सर्वप्रथम दर्शन के अर्थ में अस्तित्ववाद का प्रयोग किया। उसने स्वतंत्रता को व्यक्ति की संभावनाओं का प्रेरणा स्रोत माना। अस्तित्ववाद को व्यापक रूप से समक्ष रखने का श्रेय मार्टिन हेडेगर को जाता है। उसके अनुसार किसी एक ही वस्तु को दो भिन्न-भिन्न व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोण से देखते हैं वह भी ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता था। उसने अपने

अस्तित्ववादी विचारों का आधार यथार्थ को बनाया। सार्त्र ने व्यापक रूप से अस्तित्ववाद की अवधारणात्मक स्थापना की। इन्होंने भी ईश्वर की सत्ता को अस्वीकारा। सार्त्र ने अपने साहित्य में मनुष्य की पीड़ा एकाकीपन और संत्रस्त स्वतंत्रता का विवेचन किया है। अपनी कृति 'नासिया' में उसने अपनी सर्जता के माध्यम से अपनी अवधारणा का विकास किया है। 'बिइंग एंड नथिंगनेस' में वह निषेधों की खोखली धारणा को उजागर करता है। सार्त्र ने मानव की दुरावस्था का विवेचन अपने साहित्य में किया है। सार्त्र के सभी नाटकों, कहानियों व उपन्यासों में स्नावयिक तनाव वाले असामान्य चरित्रों की भरमार है। "सार्त्र के अनुसार संबंधों से स्वतंत्रता नियंत्रित होती है और यह एक बड़ी समस्या है। सत्व से पूर्व नास्ति है और मनुष्य एक निरर्थक व्यसन है। सब कुछ इस प्रकार घटित होता है जैसे जगत मानव और जगत में मानव सबकी अंतिम उपलब्धि यही है कि ईश्वर नही है"।3 इस अस्तित्ववादी धारा ने यूरोप से बाहर निकलकर संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया। हमारे यहाँ द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य पर इसका काफी प्रभाव पड़ा। इस प्रकार अस्तित्ववाद ने एक ओर तो प्रयोगवादी काव्यधारा नयी कविता एवं सन् 1960 के बाद की हिन्दी समकालीन कविता को विशेष रूप से प्रभावित किया।

समकालीन कविता और अस्तित्ववाद

समकालीन काव्य में अस्तित्ववादी प्रवृत्तियां कई कवियों की कविता में दृष्टिगोचर होती हैं। इसी के प्रभाव से यौन भावना का लगभग नग्न रूप हमें समकालीन कविता में दृष्टिगोचर होता है।

"हम दोनों के लिए आज मौसम अच्छा है
ताजा और सर्द
इसलिए आओ बिस्तर की धूप पर बैठें हम।
बारिश से क्यों डरे हम ?
यह तो बुनियाद है देश, राष्ट्र, कौम की
कृपण न बनो इतनी
मेरी हर चेष्टा को झेलो जी भर कर
ढंक लूंगा तुम्हें अपनी बांहों के वाटर प्रूफ से
भीगने जब लगोगी
क्या कहा ?
यह सर्दी बड़ी जालिम है
मैं अपने जिस्म से सेंक दूंगा तुम्हें
कांपने जब लगोगी"। ;शांता सिन्हा

'क्षणवाद में आस्था' समकालीन कविता में दिखाई देती है यह भी अस्तित्ववाद से प्रभावित है। इसलिए समकालीन कविताओं में क्षण को महत्व देने वाले अनेक उदाहरण अनायास मिल जाते हैं।

"यह विकल क्षण, जन्म को आतुर उचित तम खोजता।
रक्ताभ कोरक के विनश्वर गर्भ में अनुकूल है
ऋतु का खुला अभिप्राय कर्मरत हो,
स्वप्न मत देखो नहीं उन्माद न रह जाय
भौरे का निरर्थक गिर उद्दीपन"। ;कुंवरनारायण

समकालीन कविता में अनेक स्थलों पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभावस्वरूप निराशा व अनास्था का चित्रण मिलता है।

"नदी है, नाव है किंतु यहां कहीं भी रूकता नहीं पांव है।
भंवर के बाद भंवर आते हैं और चले जाते हैं
किन्तु भीतर क्या है
ऊपर नहीं लाते हैं
उस पार कोई हो या न हो
पर आज गहरी उदासी में डूबा
मेरा ही तन भीतर ही भीतर मुझे छल रहा है"।
डॉ.दिनेश

इसमें अनेक स्थलों पर जीवन की निरर्थकता और व्यक्ति की विवशता का चित्रण मिलता है। "अस्तित्ववादियों का मत है कि मानवीय जीवन एक निरर्थक समय क्रम ही है और मानवीय इकाई जीवन और मृत्यु के अतिरिक्त और किसी रूप में अपनी इयत्ता नहीं अनुभव कर पाती।"4

इस प्रकार अस्तित्ववादी विचारधारा से प्रभावित हमारे समकालीन कवि जीवन पथ पर अग्रसर होते हुए भयंकर अविवाशता का अनुभव करते हुए अभिशाप की भांति निरर्थक यात्रा करते हुए दिख पड़ता है।

"यह यात्रा कब आरंभ हुई थी ?
क्यों। किस अर्थ से ? किन मोड़ों से होकर
इतिहास तक आया हूं।
किन्तु काल की रात सहस्त्र परतों के पीछे
काली-काली चटटानों के पार
झांकने के प्रयत्न सब व्यर्थ हुए हैं
यात्रा का कुछ स्पष्ट अर्थ चेतना पटल पर
नहीं संवरना लगता है
धारा में बहते-बहते
सहसा नाव भंवर में उलझ गई है।"
प्रयागनारायण त्रिपाठी

जीवन के संबंध में निरर्थकता का यह बोध कहीं-कहीं अत्याधिक घना हो गया है उदाहरण

"और तुम खुद नहीं जानागे
तुम क्या देखना चाहते हो
क्योंकि तुम्हें जिंदगी और मौत के अतिरिक्त
शब्द नहीं दिये गये हैं
जिंदगी और मौत के अतिरिक्त" ;विजयदेव नारायण साही

इस प्रकार कहा जा सकता है कि समकालीन कविता पर अस्तित्ववाद का व्यापक प्रभाव दृष्टिगत होता है और इसमें कोई प्रवृत्तियों यथा यौन भावना का चित्रण क्षणवाद को महत्व अनास्था जीवन की निरर्थकता व विवशता का चित्रण इसी के प्रभावस्वरूप दृष्टिगोचर होती है।

संदर्भ

1. डॉ.राजेन्द्र मिश्र, कविता नये संदर्भ का विकास पृ. 140
2.डॉ.राजेन्द्र मिश्र, समकालीन विचारधाराये और साहित्य - पृ. 122-123
3.डॉ. योगेन्द्र साही, अस्तित्ववाद किर्कगार्द से कामू तक पृ. 150
4.डॉ.दुर्गाशंकर, आधुनिक कविता प्रमुखवाद और प्रवृत्तियां पृ. 245